सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-29 अंक-1 7 से 21 जनवरी, 2014 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

शीत लहर के बीच दिल्ली में विशाल रैली

महिलाओं पर अत्याचार, बलात्कार व अपराधों को रोकने की मांग पर संसद मार्च

नई दिल्ली : देश में महिलाओं पर बढ़ते हुए अपराधों के खिलाफ आन्दोलन के महत्वपूर्ण कदम के रूप में संघर्षरत संगठनों एआईएमएसएस, एआईडीवाईओ व एआईडीएसओ की ओर से 30 दिसम्बर को जन्तर-मन्तर पर एक विशाल विरोध प्रदर्शन व सभा की गई जिसमें देश के 22 राज्यों से हजारों-हजार लोगों ने पूरे जोशो-खरोश से भाग लिया, अपनी आवाज और मांगें बुलन्द की और शपथ ली कि जब तक इन मांगों को सरकार द्वारा मान नहीं लिया जाएगा वे संघर्ष करते रहेंगे।

इस सभा के मुख्य वक्ता एसयूसीआई (सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती ने उपस्थित जनसमुदाय का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि किसी भी आन्दोलन को सफल बनाने के लिए उसे उच्च सांस्कृतिक-नैतिक मूल्यबोध के आधार पर चलाना होगा। महिलाओं पर बढ़ते हुए अपराधों की समस्या एक सामाजिक-सांस्कृतिक समस्या है। इसका समाधान करने के लिए इस आन्दोलन को आगे बढ़ाते हुए सभी कार्यकर्ताओं और संगठकों को उच्च मूल्यबोध अपनाने होंगे और हर तरह के अन्याय के खिलाफ संघर्ष करते हुए उसमें बलिदान करने की मानसिकता को मजबूत करना होगा। महिलाओं पर तमाम तरह के अपराधों का मूल कारण देश की पूँजीवादी सामाजिक व्यवस्था में ही निहित है। इस परिस्थिति के मूलभूत परिवर्तन के लिए इस पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकना होगा व समाजवादी क्रान्ति सम्पन्न करनी होगी। तभी इन समस्याओं का अन्तिम समाधान होगा।

सभा को सम्बोधित करते हुए मुम्बई उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश जस्टिस सुरेश हॉस्बेट ने कहा कि महिलाओं के तमाम अधिकारों को मानवाधिकारों के रूप में स्वीकृत किया जाना चाहिए और इनका उल्लंघन मानवाधिकारों का उल्लंघन माना जाना चाहिए। उन्होंने उपस्थित विशाल जनसमुदाय को अपना संघर्ष तब तक जारी रखने की अपील की जब तक कि इसका लक्ष्य हासिल न हो जाए।

इस सभा को सम्बोधित करते हुए एसयूसीआई(सी) के सांसद डॉ. तरुण मण्डल ने जोर देकर कहा कि आम जनजीवन की परिस्थिति दिन-प्रतिदिन दयनीय होती जा रही है। जीवन के सभी क्षेत्रों में महंगाई-बेरोजगारी-भ्रष्टाचार आदि समस्याएं कई गुना बढ़ गई। साथ ही महिलाओं पर अपराध भी कई गुना बढ़ गए हैं। सरकार इन समस्याओं पर घड़ियाली आंसू बहाते हुए कह रही है कि महिलाओं को चुनी जाने वाली समितियों में 50%

(शेष पृष्ठ 2 पर)

नांदेड़ एक्सप्रेस दुर्घटना पर एसयूसीआई(सी) का बयान

28 दिसम्बर को नान्देड़ एक्सप्रेस की हुई आग दुर्घटना पर सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की कर्नाटक राज्य कमेटी ने गहरा शोक प्रकट किया है और शोकसंतप्त परिवारों के प्रति अपनी गहरी शोक संवेदना प्रकट की है जिन्होंने इस दिल दहला देने वाले हादसे में अपने सगे-सम्बन्धी खो दिये हैं। यह दुर्घटना मुसाफिरों, खास कर वातावनुकूलित बोगियों में सफर करने वाले मुसाफिरों की हिफाजत का सवाल उठा देती है चूँकि यह हाल ही हुई तीसरी दुर्घटना है जिनमें से दो दुर्घटनाएं बसों में हुई थी। इसलिए वक्त का तकाजा है कि सरकार ऐसी दुर्घटनाओं के कारणों का पता लगाने के लिए समुचित जांच कराये और ऐसी हृदयविदारक घटनाओं की पुनरावृति रोकने के लिए युद्ध स्तर पर समुचित सुरक्षा उपाय ले। इस पृष्ठभूमि में सरकार से एसयूसीआई (सी) ने आग्रह किया है कि पीड़ित परिवार को उचित मुआवजा दिया जाये, यह सुनिश्चित करे कि मुआवजा समय पर मिले और पूरी तरह बहाल हो जाने तक घायलों के इलाज का पूरा खर्च सरकार वहन करे।

जन्तर मन्तर पर विशाल रैली को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती (ऊपर), विशाल रैली का एक अंश (नीचे)

प्राचीन गुफा युग से अब तक स्त्रियों की दशा में कोई बदलाव नहीं हुआ है

— जस्टिस श्री कृष्णन

महिलाओं पर बढ़ते अपराधों के खिलाफ दिल्ली में राष्ट्रीय सम्मेलन

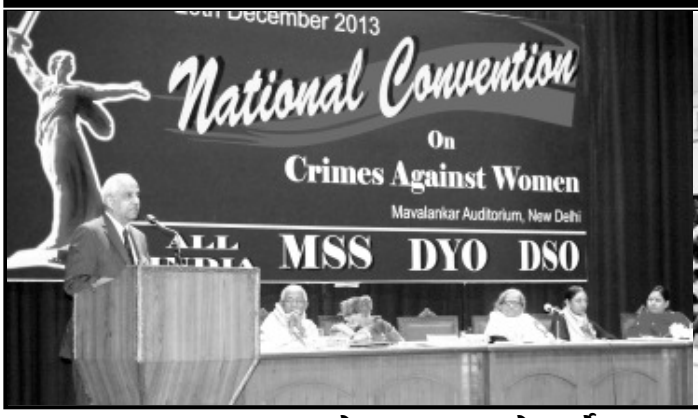

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री बी.एन. श्रीकृष्णन

नई दिल्ली : एक वर्ष पहले के अत्यन्त दुखद ''दामिनी'' बलात्कार व हत्या और उसके बाद दिल्ली सहित पूरे देश में आन्दोलन की उठी जबरदस्त लहर व उस आन्दोलन की मांगों और भावनाओं को केन्द्र करके आज 29 दिसम्बर के मावलंकर हाल, नई दिल्ली में एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया।

सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री बी.एन. श्रीकृष्णन ने महिलाओं पर बढ़ते अपराधों पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त की और कहा कि महिलाओं के खिलाफ अपराध की भावना पुरुषों के दिमाग में पनपती है और यह स्थिति प्राचीन गुफा युग से आज 2013 तक ऐसी ही बनी हुई है। यह समस्या सिर्फ कानूनी नहीं है बल्कि सामाजिक-कानूनी समस्या है। जब तक पुरुषों की ऐसी मानसिकता समाप्त नहीं होती तब तक कानूनों और कमीशनों के माध्यम से इस समस्या का हल नहीं होगा।

मुख्य अतिथियों में से एक, दिल्ली उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री राजेन्द्र सच्चर ने महिलाओं पर बढ़ते अपराधों पर गहन चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि आज हमें 'सावित्रियों' की बजाय 'द्रोपदियों' की ज्यादा जरूरत है जिसने अपने ऊपर हुए पुरुषवादी अन्याय का प्रतिकार किया था। आज की परिस्थिति में आम जनता के आन्दोलनकारी रवैये के चलते पुलिस महिलाओं पर बढ़ते अपराधों के खिलाफ मामलों को दर्ज करने को मजबूर हो गई है। मैं इस सभागार में इतनी भारी संख्या में आम जनता को देखकर अभिभूत हूँ और आशा करता हूँ कि जल्दी ही यह आन्दोलन सफल होगा।

मख्य अतिथियों में से एक, मुम्बई उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश सुरेश हॉस्बेट ने स्त्रियों पर होते अपराधों के डरावने आंकड़े पेश किए। उन्होंने बताया कि 1970 से आज तक महिलाओं पर अपराध में लगभग 800% की वृद्धि हुई है। इस मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र संघ के पुरुषों और महिलाओं के बराबरी की सिफारिशों के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि भारत में इनमें से एक भी लागू नहीं की गई है। उन्होंने आगे कहा कि जब तक महिलाओं का परम्परावादी माँ-बहन और पत्नी का दर्जा रहेगा और उन्हें एक व्यक्तित्व सम्पन्न इन्सान का दर्जा नहीं देंगे तब तक स्थिति में कोई प्रभावकारी बदलाव नहीं आयेगा और इस पूरे बदलाव के लिए एक क्रान्ति की आवश्यकता है।

मुख्य अतिथियों में से एक, अभिनेत्री एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती दीप्ती नवल ने महिलाओं की आंखो-देखी दर्दनाक स्थिति पर स्वरचित कविताओं का पाठ किया। उन्होंने एआईएमएसएस, एआईडीवाईओ और एआईडीएसओ के द्वारा आयोजित इस महत्वपूर्ण सम्मेलन और आन्दोलन का समर्थन किया।

एआईएमएसएस एवं राष्ट्रीय सम्मेलन की अखिल भारतीय अध्यक्षा कॉमरेड छाया मुखर्जी ने महिलाओं पर होने वाले सभी प्रकार के अपराधों के मूल में पितृसत्तात्मक मानसिकता को जिम्मेदार ठहराया जो महिलाओं को अपने से निम्न स्तर का मानते हैं। यह समस्या और भी गहन हो जाती है जब प्रशासन, पुलिस और राजनैतिक ढाँचा इन अपराधों को कम करने की बजाय बढ़ावा देता है।

एआईएमएसएस की अखिल भारतीय महासचिव डॉ. एच.जी. जयालक्ष्मी ने जस्टिस जे.एस. वर्मा कमीशन की रिपोर्ट के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को प्रस्तुत करते हुए सभी सिफारिशों को लागू करने की मांग की। एआईडीवाईओ के अखिल भारतीय अध्यक्ष डॉ. बी.आर. मन्जूनाथ ने आज के इस सम्मेलन के उद्देश्य और आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त किए।

सम्मेलन के विषय के महत्व व उसकी सफलता की कामना करते हुए भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री एम.एन. वैंकटचलैया और सर्वोच्च न्यायलय के पूर्व न्यायाधीश व कर्नाटक के पूर्व लोकायुक्त श्री एन. सन्तोष हेगड़े ने अपने संदेश भेजे जिनको सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया।

इस सम्मेलन में देश के 22 राज्यों से छात्र, युवा व महिलाओं ने भाग लिया जिन्होनें अपने-अपने क्षेत्रों में महिलाओं पर होने वाले अपराधों के खिलाफ आन्दोलनों में अहम् भूमिका निभाई जो अपने अनुभव और विचार और भावनाओं से इस स्म्मेलन को सफल बनाने के लिए इस सम्मेलन में दिल्ली आए।

शीत लहर के बीच दिल्ली में...

(पृष्ठ 1 का शेष)

आरक्षण देकर महिलाओं का सशक्तीकरण किया जाएगा मानो इसी से समस्या का समाधान हो जाएगा।

सभा को सम्बोधित करते हुए, सभा एवं एआईडीवाईओ के अखिल भारतीय अध्यक्ष डॉ. बी. आर. मंजूनाथ ने कहा कि ये 'दामिनी' की वर्षगांठ पर रस्म अदायगी के तौर पर होने वाला कोई श्रद्धांजलि कार्यक्रम नहीं है बल्कि तीनों संगठनों की ओर से पूरे देश भर में पिछले एक वर्ष से किए जा रहे जबरदस्त संघर्ष की आवाज को बुलन्द करने के लिए और अपनी मांगों को सरकार के सामने रखने के लिए आन्दोलन का कदम मात्र है। उन्होंने अपील की कि हम तब तक पूरी ताकत से लड़ते रहेंगे जब तक कि हमारी सारी मांगें पूरी न हो जाएं।

सभा की मांगों का एक ज्ञापन तीनों सगठनों के प्रतिनिधियों द्वारा एआईएमएसएस की महासचिव डॉ. एच.जी. जयालक्ष्मी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री को सौंपा जाएगा।

संघर्ष के जोशीले नारों और आन्दोलन की प्रतिबद्धता की गहरी भावना के साथ सभा का समापन हुआ जिसने उपस्थिति हजारों-हजार आन्दोलनकारियों को जबरदस्त जोश और हिम्मत प्रदान की।

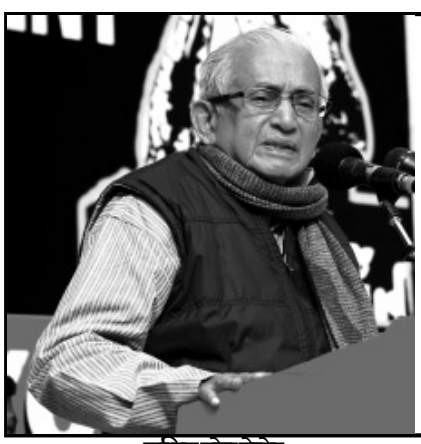

जस्टिस सुरेश हॉस्बेट

डॉ तरुण मण्डल

कॉ. छाया मुखर्जी

मार्क्सवाद – लेनिनवाद – कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तन का परचम बुलन्द करते हुए पूँजीवाद को उखाड़ फेंकने के लिए भारत को हजारों हजार खुदीराम, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, अश्फाक उल्ला, प्रीतिलता चाहिएं – कॉमरेड प्रभाष घोष

(गत 29 अगस्त को भोपाल में एआईडीएसओ के 8वें अखिल भारतीय सम्मेलन के प्रतिनिधि सत्र में एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष द्वारा दिया गया भाषण)

कॉमरेड अध्यक्ष, अध्यक्ष मण्डल के सदस्यगण, एआईडीएसओ के सभी सदस्यगण और यहाँ मौजूद डीएसओ के पूर्व नेतागण!

देश की एक बहुत ही नाजुक स्थिति में देश के सभी हिस्सों से आए युवा होनहार जुझारू छात्रों की एक बड़ी संख्या यहाँ जुटी है। मैं तमाम डेलिगेट कॉमरेडों को अपना क्रान्तिकारी अभिनन्दन पेश करता हूँ। असल में, केवल शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमारा देश अनेक गम्भीर समस्याओं से ग्रस्त है, जिसमें आर्थिक-राजनैतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक-नैतिक यानी जीवन के सभी पहलू समाहित हैं और समस्याओं की प्रकृति भी हमारे इतिहास में अभूतपूर्व है। मैं जानता हूँ कि शिक्षा की विभिन्न समस्याओं पर आप पहले ही विस्तृत चर्चा कर चुके हैं। यह सच है कि केन्द्र सरकार के साथ-साथ विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा शिक्षा पर एक के बाद एक किये जा रहे हमलों से आप रूबरू हैं। लोगों को शिक्षा मुहैया कराने की अपनी तमाम वित्तीय जिम्मेदारियों से सरकारें पूरी तरह पल्ला झाड़ रही हैं और इसकी बजाय शिक्षा के क्षेत्र में पूँजीनिवेश के जरिए कॉरपोरेट सैक्टरों को भारी मुनाफा कमाने की छूट दे रही हैं। इसी वजह से शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण की नीति को लागू किया जा रहा है। साथ ही साथ केन्द्र सरकार शिक्षा पर अपना शिकंजा और भी कसती जा रही है जिसका उद्देश्य प्रत्येक शैक्षणिक क्षेत्र पर अपना पूर्ण नियन्त्रण स्थापित करना है। याद रखें, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे मनीषी ने इस देश में धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक शिक्षा लागू करने का प्रयास किया था। महाराष्ट्र से एक अन्य महापुरुष ज्योतिबा फूले ने भी हमारे देश में आधुनिक शिक्षा लागू करने की पहलकदमी की थी। विद्यासागर ने साहसपूर्वक घोषित किया था कि सांख्य और वेदांत जैसे दर्शन सत्य प्रस्तुत नहीं करते हैं। उन्होंने भारतीय छात्रों के मन को धार्मिक जकड़बन्दी से मुक्त करने के लिए पाश्चात्य वैज्ञानिक शिक्षा लागू करने का सरकार से आग्रह किया था जिसे ब्रिटिश शासकों ने स्वीकार नहीं किया था। लेकिन आजादी आन्दोलन के समझौतापरस्त बुर्जुआ नेतृत्व ने भी इसे स्वीकार नहीं किया और सही मायने में धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक शिक्षा हमारे देश में कभी लागू ही नहीं की गयी। गौरतलब है कि इतिहास में धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक और जनवादी शिक्षा की अवधारणा ऐसे एक समय में उभर कर आई थी जब पाश्चात्य देशों में पूँजीवाद विकसित हो रहा था और उभारशील पूँजीपति वर्ग युवा, प्रगतिशील और क्रान्तिकारी था। वे सामंती निरंकुश सत्ता को उखाड़ फेंक कर बुर्जुआ जनवादी जनतन्त्र स्थापित करने और औद्योगिक क्रान्ति की बेरोकटोक प्रगति को तेज करने के लिए संघर्षरत थे।

क्यों शासक बुर्जुआ वर्ग धर्मनिरपेक्ष वैज्ञानिक शिक्षा प्रदान नहीं कर रहा

उस समय बुर्जुआ वर्ग के लिए एक ऐतिहासिक जरूरत पैदा हुई थी कि जनमानस को दैवी शक्ति की अवधारणाओं के अंधविश्वास की रहस्यवादी सोच से मुक्त किया जाए। यह जरूरी था कि एक के बाद एक वैज्ञानिक अनुसंधानों के माध्यम से अज्ञात प्राकृतिक रहस्यों के पीछे सच क्या है यह उजागर किया जाए ताकि अतिप्राकृतिक सत्ता के अस्तित्व की युगों पुरानी अवधारणा का खात्मा किया जा सके। एकमात्र वास्तविकता के रूप में प्रकृति और वस्तुजगत के अध्ययन की जरूरत भी पैदा हुई थी क्योंकि मनुष्य एक प्राकृतिक प्रक्रिया की उपज है न कि किसी दैवी सृजनकर्त्ता की रचना। परिणामत: मानव जीवन मध्ययुगीन धार्मिक दैवी सिद्धान्तों को नकारते हुए धर्मनिरपेक्ष मानवतावादी जनवादी सिद्धान्तों द्वारा संचालित किया जाना था और इसके लिए तमाम धार्मिक, नस्लगत, संकीर्ण और वंशमूलगत बाधाओं को तोड़ते हुए मानवीय सामाजिक एकता की चाह पैदा हुई थी। यह वह समय था जब प्रगतिशील बुर्जुआ वर्ग ने ''स्वतंत्रता-समानता-भाईचारे'' का परचम लहराया था और संसदीय जनतन्त्र यानी ''लोगों की, लोगों के लिए, लोगों के द्वारा'' सरकार का नारा बुलन्द किया था। लेकिन बुर्जुआ के सत्ता में आने के बाद और विकास के क्रम में जब पूँजीवाद अपने उच्चतम स्तर एकाधिकारी पूँजीवाद के स्तर में पहुँच गया तो पूँजीपति वर्ग ने अपनी पहले की प्रगतिशील भूमिका खो दी और प्रतिक्रियावादी बन गया तथा मजदूर वर्गीय क्रान्ति से भयभीत हो कर इसने उन तमाम उच्च आदर्शों को तिलांजलि दे दी। तब से तमाम प्रतिक्रियावादी बुर्जुआ राज्यों ने पुरातनपंथी धार्मिक विचारों और भावावाद के साथ समझौता करना शुरू कर दिया और धीरे-धीरे धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक और जनवादी शिक्षा प्रणाली से मुँह मोड़ लिया। आज यहाँ वहाँ इसके सिर्फ कुछ अवशेष ही पाए जाते हैं। जब समझौतापरस्त सुधारवादी बुर्जुआ नेतृत्व में भारतीय आजादी आन्दोलन विकसित हुआ तब अन्तर्राष्ट्रीय तौर पर पूँजीवाद पहले ही साम्राज्यवाद में विकसित हो चुका था, ह्रासोन्मुख, मरणासन्न एवं प्रतिक्रियावादी हो चुका था। प्रतिक्रियावादी अन्तर्राष्ट्रीय पूँजीवाद का अभिन्न अंग होने के नाते भारतीय पूँजीपति वर्ग शुरूआत से ही वैज्ञानिक-धर्मनिरपेक्ष नजरिये से भयभीय था और इसने समाज का जनवादीकरण नहीं किया। यही वजह है कि भारतीय बुर्जुआ राज्य ने इस देश में कभी भी धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक और जनवादी शिक्षा को लागू नहीं किया। इसके अलावा लाखों-लाख बेरोजगार युवाओं से रूबरू सरकारें पहले से ही संकुचित शिक्षा के अवसरों में लगातार कटौती करती जा रही हैं और दूसरी तरफ शिक्षा मुहैया कराने के नाम पर तथाकथित विशेषज्ञों और तकनीशियनों को पैदा कर रही हैं जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वंचित और नैतिक मूल्यों से विहीन हैं। इनको महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने पाश्चात्य देशों की बुर्जुआ शिक्षा के संदर्भ में 'सुप्रशिक्षित कुत्ते' या 'साक्षर मशीनों' की संज्ञा दी थी। धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक शिक्षा की बजाय हमारे देश के शासकों ने अध्यात्मवाद और विज्ञान के तकनीकी पहलुओं का सम्मिश्रण थोप कर जो शिक्षा प्रणाली लागू की है उसका कुख्यात उद्देश्य है छात्रों में फासीवादी नजरिया और फासीवादी संस्कृति विकसित करना। जब तक मौजूदा पूँजीवादी व्यवस्था कायम रहेगी तब तक शैक्षणिक क्षेत्र में ये समस्याएं न केवल मौजूद रहेंगी बल्कि निरन्तर घनघोर होती जाएंगी। अत: तमाम शैक्षणिक समस्याओं से स्थाई रूप से छुटकारा पाने और धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक और जनवादी शिक्षा हासिल करने के लिए आपको क्रान्ति करके मौजूदा पूँजीवादी व्यवस्था का खात्मा करना होगा। इसकी प्रस्तावना के तौर पर आपको इन शैक्षणिक मांगों सहित जीवन की विभिन्न ज्वलन्त मांगों पर बहुत से संघर्ष गठित करने होंगे, इनमें से कुछ मांगों को आप हासिल भी कर सकते हैं।

साथियो, समस्याएं और भी हैं जिन्हें अनदेखा या नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इस समय हमारे देश में 12 करोड़ से अधिक बच्चे कथित तौर पर बंधुआ बाल श्रमिकों के तौर पर काम कर रहे हैं। ये गरीब बच्चे किसी प्राथमिक शिक्षण संस्थान के गेट के पास भी फटक नहीं पाते या इसे छू भी नहीं पाते हैं। ये भी इस देश के ही बच्चे हैं जिन्हें शिक्षा का पूरा अधिकार है। शिक्षा पाने की तो बात ही छोड़िए ये बच्चे सड़कों पर पैदा होते हैं, सड़कों पर भीख मांगते हैं, सड़कों पर ही पड़े सड़ते रहते हैं और सड़कों पर ही मर जाते हैं। न कोई

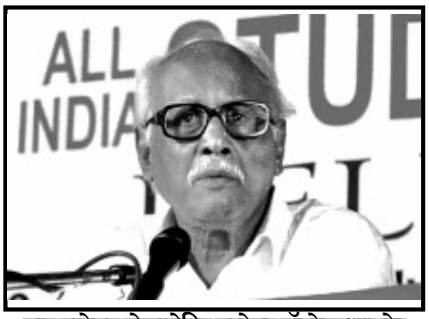

छात्र सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड प्रभाष घोष

इन पर ध्यान देता है और न कोई इनकी परवाह करता है। मातृसुलभ प्यार या पितृसुलभ देखभाल क्या होती है यह तक जानने का मौका इन्हें नही मिलता है। ऐसे हजारों हजार बच्चे हमारे देश में हैं। घोर गरीबी के चलते मां-बाप अपने बच्चों, विशेषकर बेटियों को बेचने के लिए मजबूर हैं। फिलहाल हमारे देश में एक व्यापार फल-फूल रहा है, वह है महिलाओं और बच्चों की खरीद-फरोख्त का व्यापार। सूर्यास्त होने के बाद अंधेरा होते ही एक दूसरी तरह का और भी घना अंधकार बड़े शहरों और कस्बों पर छा जाता है। हमारी बेटियाँ और बहने अपने भूखे बच्चों, बेरोजगार पति या भुखमरी के शिकार माता-पिता के लिए खाना जुटाने की खातिर बाजारों, स्टेशनों के आस-पास, गलियों के विभिन्न नुक्कड़ों पर खुद को बेचने के लिए खड़ी हो जाती हैं। हर रोज छेड़छाड़, प्रताड़ना, बलात्कार, सामूहिक बलात्कार और हत्या की खबरों से अखबार भरे रहते हैं। ऐसी जघन्य घटनाएं हर रोज हर घण्टे बढ़ती जा रही हैं। इस तरह के भयावह कुकृत्यों में कौन शामिल हैं? क्या वे इन्सान हैं? पशुओं में भी बलात्कार या सामूहिक बलात्कार आप नही पाएंगे। ये बलात्कारी एक नई पैदा हुई नस्ल, अमानवीकृत लोग हैं जो इस सड़े-गले बुर्जुआ समाज की उपज हैं। करोड़ों लोग बेरोजगार और छंटनी का शिकार हैं। हर दिन, हर हफ्ते हम देखते हैं कि मजदूर-कर्मचारियों की एक बड़ी संख्या को रोजगार से बाहर धकेला जा रहा है। ऐसे में आप सभी का भविष्य क्या है? यौवन भविष्य के सपने संजोने का समय होता है। आपके सामने क्या कोई भविष्य है? क्या एक उज्जवल भविष्य या कॅरियर की भी कोई निश्चितता है? भविष्य पूरी तरह अंधकारमय है। आशा की कोई किरण नजर नहीं आती है। क्या यही वह आजादी है जिसके लिए स्वतन्त्रता संग्राम के नेताओं ने लोगों को संगठित किया था? क्या यही वह आजादी है जिसके लिए बहादुर शहीदों ने अपना जीवन बलिदान किया था? ऐसे एक शानदार स्वतंत्रता संग्राम का ऐसा एक दुखद परिणाम क्यों हुआ? क्यों ऐसी दयनीय स्थिति है? क्या यह अपरिहार्य था, अवश्यम्भावी था? नहीं, न तो यह अपरिहार्य था और न ही अवश्यम्भावी।

कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा आजादी आन्दोलन का शानदार विश्लेषण

सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि मध्यम वर्ग के पेटी-बुर्जुआ क्रान्तिकारी नेतृत्व के साथ एक गठजोड़ कायम करके स्वतन्त्रता संग्राम में मजदूर-किसानों को संगठित करने के लिए यदि एक सही मार्क्सवादी पार्टी होती तो स्थिति अलग ही होती। वे किशोर अवस्था में आजादी आन्दोलन में शामिल हुए और स्वतन्त्रता संग्राम की क्रान्तिकारी धारा से सम्बंधित एक बहादुर योद्धा थे। शोषित-पीड़ित लोगों के प्रति अपने अथाह प्रेम और सत्य-पिपासा के साथ वे और आगे बढ़े महान क्रान्तिकारी विचारधारा मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन किया, इसे अपनाया,

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कॉमरेड प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 3 का शेष)

व्यवहार में सृजनात्मक तरीके से लागू किया और इसी क्रम में इस क्रान्तिकारी विज्ञान को और भी विकसित व समृद्ध किया।

हमारे स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास का विश्लेषण करते हुए उन्होंने दिखाया कि इसमें दो धाराएं थीं। एक धारा जिसका नेतृत्व गाँधीजी करते थे, वह समझौतापरस्त राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग के स्वार्थ का प्रतिनिधित्व करने वाली क्रान्ति-विरोधी सुधारमूलक धारा थी। दूसरी धारा का प्रतिनिधित्व विभिन्न पेटी बुर्जुआ यानी मध्यम वर्ग के ग्रुप करते थे जो चरित्र में क्रान्तिकारी, गैर-समझौतावादी धारा थी। इन तमाम ग्रुपों को शामिल कराते हुए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस एक राष्ट्रीय क्रान्तिकारी नेता के रूप में उभरे थे। यह भी याद दिला दें कि महान स्टालिन ने 1925 में भारतीय कम्युनिस्टों को पेटी-बुर्जुआ के क्रान्तिकारी नेतृत्व को मजबूत करने और समझौतापरस्त क्रान्ति-विरोधी राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग के नेतृत्व को अलग-थलग करने की सलाह दी थी। लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया नामक तब की अविभाजित सीपीआई कतई एक कम्युनिस्ट पार्टी नहीं थी। उन्होंने केवल कम्युनिज्म का लेबल लगा रखा था। अत: उन्होंने स्टालिन द्वारा दी गई गाइडलाइन को व्यवहार में लागू नहीं किया। समझौतापरस्त राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग के नेतृत्व को अलग-थलग करने के एक के बाद एक कई मौक आए थे। लेकिन तथाकथित कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व इन सभी मामलों में नाकाम रहा क्योंकि इसने गैर-मार्क्सवादी स्टैण्ड लिया था। आप जानते हैं कि एक बहुत ही उचित और महत्वपूर्ण मौका तब आया था जब हमारे देश के क्रान्तिकारी छात्र-नौजवानों की मदद से सुभाषचन्द्र बोस गांधीजी के उम्मीदवार को हराने में सक्षम हुए थे और राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने थे। उस समय कांग्रेस गैर-क्रान्तिकारियों, क्रान्तिकारियों, समझौतापरस्त ताकतों, गैर-समझौतापरस्त ताकतों से मिलकर बना एक बृहद प्लेटफार्म थी। जो समाजवाद-साम्यवाद का समर्थन करते थे वे भी राष्ट्रीय कांग्रेस में थे। लेकिन ब्रिटिश साम्राज्यवादियों और राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग के आदेश पर अध्यक्ष सुभाषचन्द्र बोस को दरकिनार करने का षड्यन्त्र रचा गया और अंतत: उन्हें त्यागपत्र देने पर मजबूर कर दिया गया। उस नाजुक समय में तत्कालीन अविभाजित सीपीआई ने उनका समर्थन नहीं किया। उन्हें खुद बहुत ही दुख के साथ कहना पड़ा था कि उनको न केवल 'सोशलिस्टों' बल्कि सीपीआई ने भी धोखा दिया था। बाद में जब सुभाषचन्द्र बोस को राष्ट्रीय कांग्रेस से निष्कासित कर दिया गया, तब भी सीपीआई ने उनका साथ नहीं दिया। निष्कासन के बाद सुभाषचन्द्र बोस ने मुख्यत: वाम ताकतों को एकजुट करने के लिए एक कांफ्रेंस आयोजित की थी और कहा था कि यदि इसे सफल बनाया जा सका तो कम्युनिस्ट आन्दोलन मजबूत होगा। इसी उम्मीद के साथ उन्होंने सीपीआई से इस कांफ्रेंस में शामिल होने की अपील की थी। तब भी सीपीआई ने कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया। इस प्रकार सीपीआई नेतृत्व ने वस्तुत: राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग को अपना नेतृत्व मजबूत करने में मदद की। यही सीपीआई 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में शामिल नहीं हुई थी, जो ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासन के खिलाफ जबरदस्त जन उभार था, बल्कि उल्टे इसने उसका विरोध किया था। आप जानते हैं कि सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज (इण्डियन नेशनल आर्मी) बनाई थी। कौशलगत उद्देश्य से उन्होंने एक सहयोगी के रूप में जापान की तरफ देखा था ताकि उनकी शक्ति को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ इस्तेमाल किया जा सके। यह रणकौशल सही था या गलत यह एक बहस का मुद्दा है, लेकिन संदेहातीत रूप से सुभाषचन्द्र बोस एक महान देशभक्त थे और जो भी उन्होंने किया वह इस देश की आजादी के लिए किया था। लेकिन सीपीआई ने सुभाषचन्द्र बोस को जापान का एजेण्ट करार दिया। द्वितीय विश्वयुद्ध खत्म होने के बाद जब आजाद हिन्द फौज के कैदियों पर मुकदमा शुरू हुआ था तब उनकी बिना शर्त रिहाई की मांग को लेकर देश भर में आन्दोलन की जबरदस्त लहर उठी थी। सीपीआई इस संघर्ष को नेतृत्व दे सकती थी लेकिन इसने इस आन्दोलन में कतई कोई हिस्सा नही लिया। उन कैदियों को फाँसी दी जानी थी लेकिन उभरते हुए आन्दोलन ने ब्रिटिश सरकार को उन्हें छोड़ने पर मजबूर कर दिया था। इस पार्टी ने 1945 के नौसेना विद्रोह के हक में भी जन समर्थन नही जुटाया था। अत: एक के बाद एक अवसर आया लेकिन इसके गैर-मार्क्सवादी स्टैण्ड की वजह से एक सही मार्क्सवादी क्रान्तिकारी पार्टी की वांछित भूमिका सीपीआई नहीं निभा सकी। एक बेतुके सिद्धान्त की वकालत करते हुए कि हिन्दू और मुसलमान दो राष्ट्र हैं सीपीआई ने देश के बंटवारे का भी समर्थन किया था। उन घटनाओं की जाँच-पड़ताल करते हुए कॉमरेड शिवदास घोष इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि यह एक असल कम्युनिस्ट पार्टी नहीं थी क्योंकि इस पार्टी के संस्थापक मार्क्सवाद-लेनिनवाद को सही तरीके से समझने में नाकाम रहे और सही मार्क्सवादी-लेनिनवादी पद्धति का अनुसरण करते हुए पार्टी को विकसित नहीं कर सके। इसीलिए देश में एक सही मार्क्सवादी पार्टी गठित करने की जिम्मेदारी कॉमरेड शिवदास घोष ने उठाई और अनेक प्रतिकूलताओं और मुश्किलों का सामना करते हुए उन्होंने इसे अंजाम दिया।

कॉमरेड शिवदास घोष के क्रान्तिकारी चिन्तन के निर्देशन में एआईडीएसओ की स्थापना हुई

यह एआईडीएसओ संगठन कॉमरेड शिवदास घोष के क्रान्तिकारी चिन्तन के निर्देशन में स्थापित और विकसित हुआ। जब हमने शुरू किया तब संख्या में हम बहुत ही कम थे। चार संस्थापक सदस्य इस सम्मेलन में यहाँ उपस्थित हैं। अन्य एक सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी यहाँ मौजूद नहीं हैं। कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती, कॉमरेड असित भट्टाचार्य, कॉमरेड रणजीत धर और मैंने अन्य तीन छात्रों के साथ संगठन के निर्माण की प्रक्रिया शुरू की थी। हालांकि हम चन्द लोग ही थे लेकिन हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तन के अपराजेय हथियार से लैस थे। आज एआईडीएसओ एक बहुत बड़ा और विकासशील संगठन है। कैसे यह इस तरह से विकसित हुआ? केवल इस हथियार से लैस होने के चलते ही हुआ जो है मार्क्सवादी दार्शनिक कॉमरेड शिवदास घोष का क्रान्तिकारी चिन्तन। यह एक बहुत ही सशक्त और अभेद्य हथियार हम सभी के हाथों में है। उन्होंने हमें बताया था कि तमाम समस्याओं का मूल कारण हमारे देश की मौजूदा पूँजीवादी व्यवस्था है। हमारे देश के राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ समझौते के जरिये सत्ता हथियाई थी और तब से देश पर शासन कर रहा है। राष्ट्रीय पूँजीवाद एकाधिकारी पूँजीवाद में भी विकसित हो गया है और भारत न केवल एक साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में उभर चुका है बल्कि यह एक क्षेत्रीय महाशक्ति के रूप में भी उभर कर आ गया है। तमाम मेहनतकश लोग पूँजीवाद की बेरहम शोषणमूलक मशीन के जुए तले पिस रहे हैं, सीमाहीन दमन और उत्पीड़न का शिकार हैं। उनके हाड़-मांस को पीसा जा रहा है, उनके खून को निचोड़ा जा रहा है। इस प्रकार पूँजीवाद हमारे जीवन में तमाम समस्याएं पैदा कर रहा है। इसलिए मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तन द्वारा निर्देशित समाजवादी क्रान्ति के जरिये इस पूँजीवादी शोषण का खात्मा किये बिना जीवन की किसी भी समस्याओं का समाधान नहीं किया जा सकता है। आप यह बात समझ लें।

चुनावों के जरिए हमें वांछित मुक्ति नहीं मिल सकती

क्यों हम चुनावों की बजाय क्रान्ति पर इतना जोर दे रहे हैं? मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तन की क्रान्तिकारी शिक्षाओं से आपको जान लेना चाहिए कि चुनाव जीवन की बुनियादी समस्याओं का कोई समाधान प्रदान नहीं कर सकते हैं, बल्कि चुनाव एक झांसा है। यह भ्रम पैदा करके राजनीतिक तौर से अनजान लोगों को धोखा दिया जाता है कि जीवन की दयनीय स्थितियों के परिवर्तन की उनकी चाह चुनाव के जरिये सरकार बदल कर पूरी की जा सकती है। क्या यह सच है? निश्चित ही नहीं। बुर्जुआ पण्डित हो-हल्ला मचाते हैं कि एक संसदीय जनतंत्र में चुनाव का मतलब है लोगों का जनादेश हासिल करना। चुनी हुई सरकार 'जनता की, जनता के लिए, जनता के द्वारा' है। लेकिन असल में यह सरकार 'पूँजीपतियों की, पूँजीपतियों के लिए, पूँजीपतियों के द्वारा' है। इसे पूँजीपति वर्ग के जनादेश में पतित कर दिया गया है। मीडिया बल, प्रशासनिक बल, बाहु बल सभी को पूँजीपतियों के धन बल द्वारा नियन्त्रित और निर्देशित किया जाता है। तथाकथित मुक्त और निष्पक्ष चुनाव में हर चीज धन बल से तय की जाती है। जैसे पूँजीपति औद्योगिक मैनेजर, बिजनैस मैनेजर नियुक्त करते हैं ऐसे ही ये इस पार्टी या उस पार्टी को सरकार की गतिविधियाँ संचालित करने के लिए अपने राजनीतिक मैनेजर के रूप में नियुक्त करते हैं। इसके अलावा आपको यह भी समझना चाहिए कि सरकार के बदलने का मतलब इस शोषणमूलक पूँजीवादी व्यवस्था और इसकी दमनकारी स्टेट मशीन का बदलाव नहीं है। आप जानते हैं कि एक बार फिर संसदीय आम चुनाव देश में होने जा रहे हैं। तमाम प्रतिस्पर्धी पार्टियाँ शासक राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग की मुख्यत: दो अति भरोसेमंद पार्टियों के पिछलग्गू की तरह काम करती हैं, अब लुभावने नारे, जुमले और छद्मावरण गढ़ने की योजना तैयार कर रही हैं जिनसे ये लोगों को बहका सकें और पूँजीपति वर्ग का बरदहस्त हासिल कर सकें। ये तमाम पार्टियाँ भ्रष्ट, ढोंगी, धोखेबाज सिद्ध हो चुकी हैं। मुख्य प्रतिस्पर्धी पार्टियों में से पूँजीपति वर्ग की वफादार सेवकों के रूप में कांग्रेस और भाजपा एक ही सिक्के के दो पहलू मात्र हैं। दोनों ही जब सत्ता में रहती हैं तब बुर्जुआ वर्ग का शोषणमूलक वर्गस्वार्थ निष्ठापूर्वक साधती हैं और इस मामले में इन दोनों के बीच कोई बुनियादी फर्क नहीं है। कांग्रेस धर्मनिरपेक्ष होने का दावा करती है लेकिन हमेशा जो यह करती रही है वह छद्म धर्मनिरपेक्षता के सिवाय और कुछ नहीं है। ऐतिहासिक और वैज्ञानिक तौर पर धर्मनिरपेक्षता का मायना है किसी अतिप्राकृतिक सत्ता को मान्यता न देना और शिक्षा, राजनीति तथा अन्य गतिविधियों को धार्मिक नजरिये की जकड़बन्दी से मुक्त करना। लेकिन शुरूआत से ही कांग्रेस ने धर्मीय राष्ट्रवाद का प्रचार और प्रयोग किया और वह भी मुख्यत: हिन्दू धर्म आधारित राष्ट्रवाद का, जो विभिन्न धर्मावलम्बी और जातीय, प्रजातीय तथा उपराष्ट्रीयता आधारित पहचान में बंटे लोगों को एकजुट करते हुए सम्पूर्ण राष्ट्रीय एकता कायम करने में पूरी तरह असफल रही। सत्ता हासिल करने के बाद कांग्रेस ने जनवादी आन्दोलन के लिए जरूरी लोगों की एकता को तोड़ने के लिए लगातार धार्मिक, संकीर्ण क्षेत्रीयवादी और जाति आधारित भ्रातृघाती दंगे भड़काए हैं और अभी भी भड़का रही हैं।

आर एस एस-बीजेपी का नकली हिन्दुत्व

बीजेपी एक छद्म हिन्दुत्ववादी पार्टी है। यदि बीजेपी को हिन्दू धर्म का सच्चा पैराकार मान लिया जाए तो यह मानना पड़ेगा कि चैतन्य, रामकृष्ण, विवेकानन्द जिन्हें हिन्दू अवतार के रूप में मानते हैं उन्हें कतई हिन्दू नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि उनमें से किसी ने भी बाबरी मस्जिद को ध्वंस करने और वहाँ राम मंन्दिर बनाने का नारा नहीं उठाया था, साम्प्रदायिक दंगे भड़काने, सम्पत्तियों को नष्ट करने, मासूम बच्चों सहित बेगुनाह लोगों की हत्या करने और महिलाओं के साथ बलात्कार करने की तो बात ही छोड़ दीजिए। रामकृष्ण ने खुद मस्जिद में नमाज अदा की थी और कहा था कि भगवान, गोड और अल्लाह एक ही हैं वैसे ही जैसे हम पानी को विभिन्न भाषाओं में विभिन्न नामों से पुकारते हैं। विवेकानन्द ने कहा था कि यह पूछना फिजूल की बात है कि कृष्ण मथुरा में जन्मे थे या वृन्दावन में, असल बात तो केवल यही है कि श्रीमद् भागवत गीता की शिक्षाओं को आत्मसात करना। उन्होंने कहा था कि वे कृष्ण और मोहम्मद का समान रूप से आदर करते हैं। उन्होंने उनकी कटु आलोचना की थी जो मन्दिर बना रहे थे और मूर्तियों को गहनों से सजा रहे थे जबकि लोग

(शेष पृष्ठ 5 पर)

कॉमरेड प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 4 का शेष)

भुखमरी का शिकार थे और सड़कों पर मर रहे थे। अब ईमानदार हिन्दू फैसला करें कि किन्हें सच्चे सच्चा हिन्दू कहा जाए; हिन्दू धर्म की इन महान हस्तियों को या बीजेपी-आरएसएस के नेताओं को? असल में अपने हिन्दुत्व की डींग हांकने वाले इन संघ परिवार नेताओं का एकमात्र उद्देश्य है, हिन्दू धार्मिक भावनाओं को उकसाना, साम्प्रदायिक तनाव पैदा करना और दंगे भड़काना ताकि हिन्दू वोट हथियाए जा सकें, सरकारी गद्दी हासिल की जा सके और लोगों की जनवादी एकता को तोड़ा जा सके। दूसरी क्षेत्रीय बुर्जुआ पार्टियाँ भी इसी उद्देश्य से जातिवादी और आंचलिक भावनाओं को भड़का रही हैं। दो बड़ी छद्म-मार्क्सवादी पार्टियाँ सीपीआई(एम) और सीपीआई कभी भी क्रान्तिकारी पार्टियाँ नहीं थीं। जब वे पश्चिम बंगाल और केरल में सत्तासीन थीं तब इन्होंने वर्ग संघर्ष और जन संघर्षों को बेरहमी से कुचलने के लिए पुलिस बल का इस्तेमाल किया था। बहुत लम्बे अर्से से इन्होंने जुझारू वामपंथी और जनवादी आन्दोलन का रास्ता छोड़ दिया है। कुछ 'वामपंथी-शब्दावली' बोलते हुए ये 'धर्मनिरपेक्षता' की रक्षा के नाम पर कांग्रेस के साथ गुप्त तालमेल करने का काम कर रही हैं और सत्ता के गलियारों में बने रहने के लिए ही अन्य क्षेत्रीय पार्टियों को भी लुभा रही हैं। इन हालातों में यह समय की बेहद जरूरी मांग है कि पूँजीवाद-विरोधी क्रान्ति के लिए जमीन तैयार करने की खातिर वर्ग संघर्ष और जन संघर्ष गठित करने और तीव्रतर करने के लिए असल क्रान्तिकारी अपनी कमर कस लें। जब तक मेहनतकश जनता संसदीय भ्रमजाल में फंसी हुई है तब तक क्रान्तिकारियों को भी चुनावों में शिरकत करने की जरूरत है इस स्पष्ट उद्देश्य के साथ कि संसदीय राजनीति की निरर्थकता का पर्दाफाश करते हुए लोगों को इस भ्रमजाल से मुक्त करना है और मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तन का झण्डा बुलन्द करते हुए लोगों को क्रान्तिकारी संघर्षों की पांतों में शामिल कराना है।

प्राचीन भारत में वस्तुवादी दर्शन का अभ्यास

आप जानते हैं कि हमारे देश में एक प्रचार किया जाता है कि भारत धर्म भूमि है, ऋषि-मुनियों की भूमि है, वेद-उपनिषदों की भूमि है और चूँकि मार्क्सवाद एक भौतिकवादी दर्शन है इसलिए यह यहाँ लागू नहीं होता है। क्या यह सच है? नहीं, कतई सच नहीं है। यह इतिहास को झुठलाना है, सच का मजाक उड़ाना है। प्राचीन काल में ठीक प्राचीन यूनान की तरह ही इस देश में भी तत्कालीन वस्तुवादी चिन्तन का जबरदस्त विकास हुआ था। आज भी कॉलेजों या युनिवर्सिटियों में भारतीय वस्तुवादी दर्शन पर पाठ्यक्रम हैं जिन्हें चार्वाक दर्शन, लोकायत दर्शन इत्यादि कहा जाता है। इस देश में विकसित इन प्राचीन वस्तुवादी दर्शनों के अनुसार इस विश्व में प्रत्येक चीज चार मूल तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु से मिलकर बनी है। अन्य तबके ने इन चारों में एक और जोड़ दिया यानी व्योम। एक साथ इन मूल तत्वों को पंच भूत कहा गया यानी पांच पदार्थ जिन से मिलकर यह भौतिकजगत बना हुआ है। ये अवधारणाएं प्राचीन समय में उभरी थी। हिन्दू ऋषि कणाद (600 ई. पू.) ने बताया था कि प्रकृति में हर चीज परमाणुओं (एटमों) से मिल कर बनी है। खुद यह दर्शन यानी फिलासफी शब्द ही वस्तुवादी है; इसका मायना है जो हम देखते हैं या पंचेन्द्रियों के माध्यम से जो हम ग्रहण करते हैं वही सत्य है। 'नास्तिक' शब्द ही भगवान में विश्वास न करने को व्यक्त करता है। उपनिषदों में भी आप याज्ञवल्क्य और उद्दालक के बीच बहस पाएंगे। याज्ञवल्क्य भाववाद और उद्दालक वस्तुवाद का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। यह इतिहास है। सशानवेद उपनिषद में, बृहदारण्यक उपनिषद में, छान्दोग्य उपनिषद में आप वस्तुवाद पर चर्चा पाएंगे। कोई इसको नकार नहीं सकता है। 'जीरो' का एक अंक के रूप में आविष्कार यहीं हुआ था। दूसरे शब्दों में, यह माना गया था कि इस ब्रह्माण्ड में किसी गैर-वस्तु का अस्तित्व नहीं है। इसलिए जीरो का भी एक परिमाणगत मूल्य है जो 'नथिंग' के अस्तित्व को दर्शाता है। यदि आप अण्डमान टापुओं के जंगलों में जाएं तो आप पाएंगे कि वहाँ एक 'जारोआ' नाम का कबीला रहता है जो आदि मानव का जीता-जागता नमूना है। उनकी कोई निजी संपत्ति नहीं है। उनके बीच कोई वर्ग विभाजन नहीं है। वे भगवान में विश्वास नहीं रखते हैं। वे किसी भगवान की पूजा नहीं करते हैं। इसलिए यह सच नहीं है कि शुरूआत से ही आदमी भगवान में विश्वास करता था और भगवान की पूजा करता था। यहाँ मैं विवेकानन्द की एक बात का उल्लेख करना चाहूँगा। आप जानते हैं कि वे वेदान्त के सशक्त व्याख्याता थे। 1897 में उन्होंने लाहौर में एक सभा को सम्बोधित किया था और वह भाषण एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हुआ था जिसे अद्वैत वेदान्त कहा जाता है। वे एक ईमानदार व्यक्ति और जानी-मानी हस्ती थे। उन्होंने कहा था, ''इस ब्रह्माण्ड के सत्यों के लिए बाह्य प्रकृति में पहले खोज हुई थी। वस्तु जगत से जीवन की गहन समस्याओं का समाधान पाने का प्रयास हुआ था।'' विवेकानन्द जैसे व्यक्ति ने इस भाषा में बताया था। बुद्ध भी जिन्हें भगवान कहा जाता है किसी भगवान या स्वर्ग या नर्क के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते थे। जैनवाद के संस्थापक महावीर भी किसी भगवान या स्वर्ग-नर्क में विश्वास नहीं रखते थे। आप उनके साहित्यों को पढ़ सकते हैं। रूढ़िवादी हिन्दुओं ने वस्तुवाद समाहित करने वाले उन तमाम साहित्यों को नष्ट कर दिया था। वस्तुवादी चिन्तन के कुछ अवशेष केवल संदर्भ के रूप में हिन्दू धार्मिक ग्रंथों में मिलते हैं, जब वे उनके खिलाफ तर्क दे रहे होते हैं। अत: इसे नकारा नहीं जा सकता कि इस देश में वस्तुवादी चिन्तन के विभिन्न सशक्त उदाहरण मौजूद हैं।

समाज में वर्ग विभाजन प्रकट होने के बाद ही भगवान की अवधारणा पैदा हुई।

यह तथ्य कि मनुष्य का चिन्तन पूरी तरह वस्तुवादी था आदिम समाज की अवस्था में सभी देशों के लिए सच था। क्योंकि एक विचार अवधारणा या चिन्तन एक विशेष वास्तविक वस्तुगत स्थिति के अनुरूप पैदा होता है। उस आदिम अवस्था में निजी सम्पत्ति नहीं थी, सम्पत्ति मालिकाने की भावना नहीं थी वर्ग शोषण और शासन नहीं था। मनुष्य का जीवन तब लगभग पशुओं के जीवन जैसा था और जिन्दा रहने के लिए मनुष्य को केवल प्राकृतिक ताकतों का मुकाबला करना पड़ता था। उस समय वस्तुगत स्थिति में किसी अतिप्राकृतिक सत्ता की अवधारणा पैदा होने का कोई आधार ही नहीं था। विकास की बाद की अवस्था में कृषि या पशुपालन के रूप में मनुष्य की उत्पादन की ईजाद के चलते समाज की दूसरी अवस्था में यानी गुलाम व्यवस्था में वर्ग-विभाजन के साथ सम्पत्ति की भावना, वर्ग शोषण और वर्ग शासन धीरे-धीरे प्रकट हुआ। उस वस्तुगत परिस्थिति के आधार पर मालिक, शासक और विश्व के सृजनकर्त्ता और दैवी शक्ति तथा दैवी शासन के रूप में एक अतिप्राकृतिक शक्ति की अवधारणा भी विकसित हुई। यह माना गया कि जैसे समाज में तमाम गतिविधियाँ मालिक या शासक के आदेशानुसार हो रही हैं उसी तरह तमाम प्राकृतिक परिघटनाएं यानी ऋतु परिवर्तन, दरियाओं में लहरें और ज्वार-भाटा, दिन के बाद रात और रात के बाद दिन, जीवन चक्र में जन्म, विकास, मृत्यु इत्यादि एक अतिप्राकृतिक सत्ता या विश्व के मालिक की इच्छा या आदेश के अनुसार एक व्यवस्थित तरीके से हो रहा है। उस समय भगवान की अवधारणा और भगवान के संदेशों की अवधारणा जो विभिन्न धर्मों के माध्यम से दी जा रही थी। उसने न्याय-अन्याय की कुछ भावनाओं को; जीवन को संचालित करने के लिए नीति-नैतिकता, बुराइयों और अच्छाइयों की धारणाओं को प्रदान किया और गलत से लड़ने के लिए उत्पीड़ित लोगों को प्रेरित किया था। उस हद तक उस दौर में इन धार्मिक अवधारणाओं ने एक प्रगतिशील भूमिका निभाई थी। लेकिन धर्म वर्ग विभाजन का गरीब और अमीर के बीच विभाजन का विरोध नहीं कर सका बल्कि इसका बचाव किया क्योंकि इन सब को दैवी रचना के रूप में समझा गया।

आज धर्म हमारा मार्गदर्शन नहीं कर सकता है।

अब सवाल उठता है कि क्या धार्मिक चिन्तन और ग्रंथ लोगों और छात्रों को आज उनके जीवन को त्रस्त कर रही समस्याओं के समाधान का रास्ता दिखा सकता है? शिक्षा से सम्बन्धित समस्याएं हैं, बेरोजगारी, छंटनी, महंगाई, टैक्सों में बढ़ोतरी, मुद्रास्फीति, रुपए का अवमूल्यन, मंदी, उद्योगों का बन्द होना, तालाबन्दी, सभ्यता को तबाह करने वाला सूखा और बाढ़, असुरक्षा, महिलाओं का बलात्कार और हत्या, बच्चों और महिलाओं की तस्करी, जनवादी अधिकारों और आन्दोलनों पर हमले, पूँजीवादी शोषण, साम्राज्यवादी आक्रमण इत्यादि इत्यादि जैसी समस्याओं का हम सामना कर रहे हैं। क्या कोई धार्मिक ग्रंथ इन समस्याओं पर रोशनी डालता है और इनके समाधान के लिए कोई गाइडलाइन प्रदान करता है? यह सच है कि कुछ धर्मों के संस्थापकों ने अपनी प्रारम्भिक अवस्था में मानवजाति को महान सेवाएं प्रदान की थी और हम उसका आदर करते हैं। उस समय उस दौर के अनुरूप धर्मों ने गाइडलाइनें और नैतिकताएं प्रदान की थी। लेकिन समय बदलने के साथ-साथ ये गाइडलाइनें पुरातन और अकार्यकारी हो गई। बुर्जुआ डैमोक्रेटिक क्रान्ति के समय बुर्जुआ वर्ग ने भी धार्मिक विचारों को गैर जरूरी, असंगत और इतिहास की विच्युति के रूप में नकार दिया था। यांत्रिक वस्तुवाद, अज्ञेयवाद और धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद के आधार पर धार्मिक प्रचारकों की भूमिका को गौण कर दिया था। यह मार्क्सवाद ही था जिसने पहले पहल उस दौर और धार्मिक विश्वासों के अविर्भाव के पीछे के कारणों और तत्कालीन समय में उनकी प्रगतिशील भूमिका का वैज्ञानिक विश्लेषण किया था। लेकिन आज धार्मिक विश्वास हमें कहां ले जाएगा? यह केवल लोगों को इस विचार के साथ गुमराह ही करेगा कि उनके जीवन की दुख-तकलीफें, वर्ग विभाजन, वर्ग शोषण इत्यादि सब कुछ सर्वशक्तिमान परमात्मा द्वारा पूर्वनिर्धारित हैं और इसलिए बदली नहीं जा सकती हैं। अमीर वे हैं जिन्होंने अपने पूर्वजीवन में पुण्य किए थे जबकि गरीब वे हैं जिन्हेंने अपने पूर्वजन्मों में पाप किए थे। गरीब अपने पूर्वजन्मों के कर्मों की वजह से कष्ट झेल रहे हैं। इसलिए यदि आप प्रतिवाद करेंगे तो आप भगवान की मर्जी के खिलाफ जाएंगे और इस प्रकार एक और अपराध करेंगे। इसलिए बिना किसी शिकायत के खुशी-खुशी परमात्मा की इच्छा का पालन करिए और तकलीफों को कम करने के लिए परमात्मा से दया याचना करिए। यह विडम्बना है कि पूँजीपति वर्ग जो एक समय अपने उदय काल के दौरान धर्मों के खिलाफ लड़ा था वही अब अपनी प्रतिक्रियावादी अवस्था में मेहनतकश जनता के क्रान्तिकारी संघर्षों की उफनती लहरों के खतरे से अपने वर्ग स्वार्थ की रक्षा के लिए धर्मों का संरक्षक बन गया है। यह भी सत्य है कि धार्मिक आन्दोलनों की प्रारम्भिक अवस्था में तत्कालीन सामाजिक अन्यायों के खिलाफ धार्मिक प्रचारक लड़े थे और इसके लिए शासकों द्वारा प्रताड़ित किए गए थे। लेकिन बाद में देखा गया कि उनके अनुयायियों ने किसी सामाजिक अन्याय के खिलाफ प्रतिवाद की कोई आवाज बुलन्द नहीं की बल्कि उन्होंने उत्पीड़ित लोगों की प्रतिवाद की भावना पर ठण्डा पानी डालने का ही काम किया। यही वजह है कि न तो धर्म और न ही बुर्जुआ विचारधारा आज जीवन की समस्याओं का कोई समाधान कर सकती है। केवल मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तन ही राह रौशन कर सकता है और शोषित लोगों की मुक्ति के लिए हमें रास्ता दिखा सकता है और सही गाइडलाइन प्रदान कर सकता है।

मार्क्सवाद के खिलाफ पूँजीपति वर्ग का झूठा प्रचार

हमारे देश में मार्क्सवाद के फैलाव को बाधित करने के लिए पूँजीवाद के प्रतिरक्षक इस तरह की बातें करते हैं कि मार्क्सवाद तो विदेशी है। लेकिन संसदीय लोकतंन्त्र की धारणा वे कहाँ से लाए थे? कहाँ से वे संवैधानिक शासन, आधुनिक न्याय शास्त्र इत्यादि की अवधारणाएं लाए थे? कहाँ से उन्हें आधुनिक विज्ञान के ताजातरीन

(शेष पृष्ठ 6 पर)

कॉमरेड प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 5 का शेष)

सिद्धान्तों, फिजिक्स, कैमेस्ट्री, बॉयोलॉजी और विज्ञान की अन्य शाखाओं के क्षेत्र में उद्घाटित ताजातरीन सत्यों की जानकारी प्राप्त हुई है? क्या ये चीजें श्रीमद भागवत गीता या वेद-वेदान्तों में लिखी हुई हैं? उन्होंने यह सब चीजें पाश्चात्य देशों से प्राप्त की हैं। पाश्चात्य देशों से उन चीजों या सिद्धान्तों को प्राप्त करने में उन्हें कोई समस्या नहीं है जो उनके वर्ग स्वार्थ की सेवा के लिए काम में लाई जा सकती हैं लेकिन मजदूर वर्ग मार्क्सवाद को नहीं अपना सकता है क्योंकि यह शासक पूँजीपति वर्ग और इसके प्रतिरक्षकों के लिए खतरा पैदा करता है। इसके अलावा पूँजीपति वर्ग विज्ञान को उद्योगों, कृषि, भवन निर्माण, यातायात, दवाइयों, हथियारों यानी जीवन की लगभग सभी गतिविधियों में इस्तेमाल करता है। लेकिन मानव चिन्तन में, इतिहास की वस्तुपरक व्याख्या में, दार्शनिक, सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को जांचने में यह विज्ञान को लागू किए जाने का भरपूर विरोध करता है चूँकि ये ह्रासोन्मुख, मरणासन्न, पुरानी प्रतिक्रियावादी पूँजीवादी व्यवस्था के अस्तित्व को खतरे में डाल देते हैं।

सोवियत समाजवाद के ढह जाने के बारे में गलत अवधारणा

एक अन्य प्रचार है कि सोवियत यूनियन और चीन में समाजवाद 'ध्वस्त' हो गया है; इसलिए समाजवाद का कोई भविष्य नहीं है। हाँ यह बड़ी दुख की बात है कि रूस और चीन में समाजवाद ध्वस्त हो गया। लेकिन क्या पूँजीवाद के पैरोकर इस बात को नकार सकते हैं कि रोमां रोलां, बर्नाड शॉ, एल्बर्ट आइन्स्टीन जैसी महान हस्तियों ने एक समय बुर्जुआ सभ्यता से विक्षुब्ध और निराश हो कर नई सभ्यता की शुरूआत के रूप में सोवियत क्रान्ति की सराहना की थी? रवीन्द्रनाथ टैगोर, शरत्चन्द्र, प्रेमचन्द, सुब्रमण्यम भारती, नजरूल जैसे सभी महानुभावों ने सोवियत क्रान्ति का अभिनन्दन किया था। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस खुद एक मार्क्सवादी नहीं थे लेकिन उन्होंने कहा था कि 19वीं शताब्दी में जर्मनी का महानतम योगदान था मार्क्सवाद और 20वीं शताब्दी में रूस का महानतम योगदान था सोवियत समाजवादी क्रान्ति, समाजवादी व्यवस्था, समाजवादी संस्कृति। वे एक महापुरुष के रूप में, मानवजाति के रक्षक के रूप में वे कॉमरेड स्टालिन का बहुत आदर करते थे; क्योंकि समाजवाद एक नई सभ्यता लाया था, एक ऐसी सभ्यता जिसने वर्ग शोषण, मानव द्वारा मानव के शोषण के अन्तिम खात्मे के लिए मार्ग प्रशस्त किया था। सोवियत यूनियन में बेरोजगारी नहीं थी, भुखमरी नहीं थी। काम के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गई थी। वहाँ सभी के लिए मुफ्त शिक्षा, मुफ्त इलाज उपलब्ध था। वहाँ कोई साम्प्रदायिक तनाव, धार्मिक तनाव, राष्ट्रीयताओं के झगड़े नहीं थे। विज्ञान के क्षेत्र में विश्व साम्राज्यवाद-पूँजीवाद को चुनौती देते हुए सोवियत यूनियन आर्थिक राजनैतिक सांस्कृतिक तौर पर, निरन्तर विकसित होता गया। इसने विश्व शान्ति के गारण्टर के रूप में काम किया। इसने तमाम युद्धों और विश्व युद्ध का विरोध किया। इसने तमाम साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्षों में उपनिवेशों और अर्ध-उपनिवेशों की सीधे-सीधे मदद की। यह विश्व के तमाम पूँजीवादी-साम्राज्यवादियों के लिए दु:स्वपन बन गया था।

इस प्रकार सोवियत यूनियन प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रहा था। लेकिन एक विशेष समय के बाद कुछ समस्याएं सामने आने लगी थी। हालांकि नेतृत्व आर्थिक तौर पर, राजनीतिक तौर पर पूँजीवाद को लगभग निर्मूल करने में सक्षम था लेकिन काफी हद तक ऊपरी ढाँचे में, सांस्कृतिक क्षेत्र में, पूँजीवाद एक जबरदस्त ताकत के रूप में रह गया था। इसने बुर्जुआ ताकतों को पुन: प्रकट होने का मौका दिया और संशोधनवाद को जन्म दिया जिसने बाद में प्रतिक्रान्तिकारी ताकत के रूप में काम किया और महान स्टालिन की मृत्यु के बाद विश्व साम्राज्यवाद के साथ सांठ-गांठ करके प्रतिक्रान्ति संगठित की और समाजवाद को ध्वस्त कर दिया। लेकिन हम एक बात कह सकते हैं–इतिहास में देखा गया है कि किसी नई विचारधारा को अन्तिम विजय हासिल करने में कई सौ सालों का समय लगा था। किसी धर्म को अन्तिम विजय हासिल करने के लिए सैकड़ों साल तक संघर्ष और युद्ध संचालित करने पड़े थे। बुर्जुआ पुनर्जागरण के विचार सामंती व्यवस्था के अन्दर ही पनपे थे और जिसकी परिणति बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रान्ति सफलतापूर्वक हासिल करने में हुई थी, सामंतवाद को परास्त करके अंतिम विजय हासिल करने में बुर्जुआ वर्ग को 350 से भी ज्यादा साल लगे थे। लेकिन गुलाम व्यवस्था और सामंतवाद दोनों ही वर्ग विभाजित समाज थे। पूँजीवाद भी वर्ग विभाजित समाज है। समाज बदला लेकिन वर्ग विभाजन बरकरार रहा; केवल शोषण का रूप बदला। विश्व इतिहास में समाजवाद ही पहली व्यवस्था थी जिसने वर्ग शोषण के खात्मे और वर्गहीन साम्यवादी समाज की स्थापना का काम किया।

आप जानते हैं इतिहास में वर्ग शोषण हजारों-हजार साल तक जारी रहा था लेकिन समाजवाद केवल सत्तर सालों तक कायम रहा था। अत: सत्तर सालों तक समाजवाद को हजारों-हजार साल तक जारी वर्ग शोषण के इतिहास के खिलाफ बहुत ही कठिन संघर्ष छेड़ना पड़ा था। निश्चित ही जब कभी और जहाँ कहीं भी भविष्य में पूँजीवाद-विरोधी क्रान्ति की जाएगी सोवियत रूस और चीन में समाजवाद की कमियों से उचित सबक लेते हुए समाजवाद को विकसित करना पड़ेगा ताकि प्रतिक्रान्ति उसे तबाह न कर सके। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मानवजाति का भविष्य, विश्व सभ्यता का भविष्य केवल समाजवाद में निहित है साम्यवाद में ही निहित है। यही इतिहास का एक अटल नियम है।

विश्वभर में पूँजीवादी दमन के खिलाफ लोग प्रतिवाद में सड़कों पर उतर रहे हैं

आज दुनिया के हालात देखिए। अमेरिका, यूरोप को देखिए। हर जगह आज पूँजीवाद संकट में डूबा हुआ है; खुद इस व्यवस्था की पैदाइश संकट के दलदल में निरन्तर धंसता और गहरा धंसता चला जा रहा है। साम्राज्यवादी महाशक्तियों सहित ये तमाम देश अंतहीन बाजार संकट से रूबरू हैं। पूँजीवाद-साम्राज्यवाद की बहु-प्रचारित बाजार अर्थव्यवस्था के पास अब कोई बाजार नहीं है। क्यों? क्योंकि पूँजीवाद में बाजार का मतलब है लोगों की खरीद शक्ति। कैसे शोषित लोगों के पास खरीद शक्ति हो सकती है? अधिकतम संख्या में लोग बेरोजगार या अर्ध-बेरोजगार हैं और जिनके पास रोजगार है वे भी अल्प वेतन पाते हैं। इसलिए बाजार का संकट है। सभी जगह असंतोष बढ़ रहा है। अभी हाल ही में आपने 'वॉल स्ट्रीट दखल करो' देखा है। हजारों-हजार छात्रों, नौजवानों और मजदूरों ने एक साथ मिलकर यह संघर्ष शुरू किया था। यूरोप में हड़तालों की लहरें उठ रही हैं और वे साम्राज्यवाद-पूँजीवाद के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द कर रहे हैं लेकिन इन उभरते हुए आन्दोलनों को नेतृत्व देने के लिए सही क्रान्तिकारी राजनीति और सही क्रान्तिकारी पार्टी का अभाव है। आन्दोलनों की लहरें आ रही हैं लेकिन वापस पीछे हटती जा रही है; पुन: आन्दोलन की लहरें आ रही हैं और फिर पीछे हटती जा रही हैं क्योंकि क्रान्तिकारी नेतृत्व का अभाव है। लेकिन यह स्थिति लम्बे अर्से तक नहीं रहेगी। निश्चित ही राह रोशन करने के लिए क्रान्तिकारी विचारधारा यानी मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तन का पता संघर्षरत लोग लगा ही लेंगे।

लोगों के संघर्षों को गाइड करने के लिए सही क्रान्तिकारी नेतृत्व की जरूरत है

हमारे देश में भी लोग मुक्ति के लिए छटपटा रहे हैं। कौन उन्हें क्रान्ति की राह दिखा सकता है? आम मजदूर, आम गरीब किसान, खेतिहर मजदूर अनजान हैं, वे अनपढ़ हैं। वे अपनी तमाम दुख-तकलीफों और कंगाली के लिए केवल अपने भाग्य को ही दोष देते हैं। वे समझते नहीं हैं और मौजूदा पूँजीवादी व्यवस्था को दोष नहीं देते हैं। वे मृत्यु के बाद ही मुक्ति देखते हैं इस असहनीय जीवन से उनकी मुक्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं। लेकिन असंतोष बढ़ता जा रहा है। आक्रोश संचित होता जा रहा है। ये जमा हुआ असंतोष यदा-कदा यहाँ वहाँ छिटपुट आन्दोलनों के रूप में फूट पड़ता है। यह क्रान्तिकारी विचारधारा से लैस शिक्षित छात्र-नौजवानों का अत्यावश्यक काम है जीवन के बुर्जुआ और पेटी बुर्जुआ तरीके से नाता तोड़ लेना और क्रान्ति के बुद्धिजीवी बन जाना, शोषित लोगों को सैद्धान्तिक राजनीतिक और सांस्कृतिक तौर से शिक्षित करना और उन्हें क्रान्तिकारी संघर्ष में संगठित करना। ऐतिहासिक तौर से समाज में मूल द्वन्द्व पूँजी और श्रम के बीच में है। मजदूर क्रान्तिकारी ताकतें हैं। उन्हें पूँजीवाद की कब्र खोदनी है। अत: इसी के अनुरूप उन्हें शिक्षित करना है। यह हमारे कम्युनिस्ट छात्रों और लड़ाकु युवाओं का सर्वप्रमुख कार्य है।

युवाओं को अमानवीय बना देना बुर्जुआ षड़यन्त्र है

कॉमरेडगण! आप हमें देखिए। हम चार यहाँ है। कॉमरेड माणिक मुखर्जी उपस्थित नहीं हैं। हम कॉमरेड शिवदास घोष के क्रान्तिकारी विचारों से शिक्षित हुए हैं। हमने किशोर अवस्था में पहले एआईडीएसओ में अपनी क्रान्तिकारी स्कूलिंग शुरू की थी। हमें उम्मीद है कि भविष्य में एआईडीएसओ, एआईडीवाईओ और कॉमसोमोल से अधिकाधिक क्रान्तिकारी नेता और योद्धा उभरेंगे। यह बुर्जुआ सभ्यता लगभग एक सड़ा-गला बदबूदार शव है। इसे तुरन्त दफनाने की जरूरत है। बुर्जुआ सभ्यता की राख पर, एक नई सभ्यता, समाजवादी सभ्यता का निर्माण करना होगा। यह हमारा ऐतिहासिक कर्तव्य है। इसलिए मैं आप से अपील करता हूँ कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तन का मनोयोग से अध्ययन करें, इसे अपनाएँ, जीवन के सभी पहलुओं में इसे लागू करें, उच्च क्रान्तिकारी संस्कृति हासिल करें, वह संस्कृति जिसे कॉमरेड शिवदास घोष ने प्रतिपादित किया है। यह समय की बेहद जरूरी मांग है। शासक पूँजीपति वर्ग और उसकी ताबेदार पार्टियां छात्र-नौजवानों को शराबी, नशे का आदी, जुआरी, यौन विकृति का शिकार बना कर, विभिन्न माध्यमों के जरिए फूहड़पन, अश्लीलता और अन्य कुत्सित विचारों के निरन्तर प्रचार-प्रसार के माध्यम से कुप्रवृत्तियों का दास बनाकर उन पर घातक प्रहार कर रही हैं। इस प्रकार छात्र-नौजवानों को अमानवीय बना देने, बुराई और अन्याय के खिलाफ तमाम लड़ाकू मानसिकता से उन्हें महरूम कर देने और तमाम सूक्ष्म भावनाओं, मूल्यों, नैतिकता, और संजीदगी से वंचित यन्त्र मानवों में उन्हें तब्दील कर देने का उनकी तरफ से सुनियोजित षड़यन्त्र चलाया जा रहा है। उन्हें पुनर्जागरण और स्वतंत्रता संग्राम की शानदार विरासत से विछिन्न किया जा रहा है। तमाम महापुरुषों, क्रान्तिकारियों और शहीदों के जीवन और शिक्षाओं को विस्मृति के गर्त में धकेल दिया गया है।

एआईडीएसओ द्वारा छात्र संघर्षों को क्रान्तिकारी नेतृत्व प्रदान करना चाहिए

छात्रों, युवाओं और आम लोगों के बीच भी सशक्त क्रान्तिकारी सांस्कृतिक आन्दोलन संगठित करने के जरिए आपको इसका प्रतिरोध करना है। सिर्फ इतना ही नहीं कि आपको विभिन्न मुद्दों पर विक्षोभात्मक आन्दोलनों में खुद को संलिप्त करना चाहिए बल्कि इसके साथ साथ सहायक सांस्कृतिक आन्दोलन भी विकसित करना है; और सामाजिक कल्याण की गतिविधियाँ भी संचालित करनी हैं। आपको विज्ञान क्लबें, साहित्यिक संगठन, संगीत गोष्ठियां, ड्रामा यूनिटें, खेलकूद टीमें–छात्रों को शामिल कराने के लिए सभी कुछ विकसित करना है। छात्रों के जीवन के सभी पहलुओं में एआईडीएसओ को नेतृत्व प्रदान करना और इस तरह संगठित होना चाहिए। आप संगठन को अधिकाधिक विकसित और प्रसारित करिए। हाँ, एआईडीएसओ विकसित हो रहा है लेकिन और भी विकसित होने की जरूरत है। न केवल संख्यात्मक रूप से बल्कि गुणों में भी आपको विकसित होना चाहिए। आपको अपनी संस्कृति, व्यवहार, ईमानदारी, विनम्रता, उद्देश्यपूर्णता और अपने समर्पण और निष्ठा द्वारा, उनके प्रति अपने प्यार द्वारा छात्रों और लोगों को

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कॉमरेड प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 6 का शेष)

आकर्षित करना चाहिए। इस प्रकार उनका दिल जीतिए, उन्हें संगठित करिए। यह समय की बेहद जरूरी मांग है। आपके पास एआईडीएसओ का बैनर है; आपके पास मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तन का अभेद्य हथियार है। आपके पास पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति का परचम है। आप इस परचम को बुलन्द रखिए मजबूती से, अडिग रह कर, साहसपूर्वक और दृढ़तापूर्वक इस संघर्ष को आगे बढ़ाना है। यहाँ हमारे देश में छात्र-नौजवानों को कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा दिए गए ऐतिहासिक संदेश के साथ मैं समाप्त करता हूँ। मैं जानता हूँ सभी वरिष्ठ कॉमरेड इस संदेश से अवगत हैं और इसे बार-बार पढ़ा है लेकिन हमारी चेतना को पुनः जागृत करने के लिए मैं इस ऐतिहासिक संदेश के साथ समाप्त करता हूँ। अब मैं पढ़ता हूँ-''कॉमरेड्स याद रखें, जो शुरूआत में ही विचारधारा और आदर्श के लिए कुर्बानियाँ दे सकते हैं, वे बहुत नहीं चन्द लोग ही होते हैं-यौवन से भरपूर, तेजस्वी, छात्र एवं नौजवान। हर देश में समाज विकास के हर स्तर पर ये छात्र और नौजवान ही हैं जो क्रान्तिकारी विचारधारा से प्रभावित एवं लैस हो कर आगे आते हैं और पूरी तरह समर्पित होकर वे जनता के बीच जाते हैं, उन्हें जागृत करते हैं, हजारों की तादाद में संगठित करते हैं और उनकी राजनैतिक शक्ति की सृष्टि करने में सहायक होते हैं। तब एक दिन वक्त आता है जनता द्वारा कार्रवाई करने का, जिसे हम क्रान्ति कहते हैं। उसके पहले आपको बहुत से कदम चलने होंगे-कठिन और यातनापूर्ण-दुखदायी किन्तु आनन्ददायक भी। मैं कहता हूँ यही है अधिक आनन्ददायक और सम्मानजनक रास्ता। हाँ, संघर्ष की इस राह में पीड़ा हो सकती है और कभी घोर यातना भी। मगर बेशक यही है जीने का सम्मानजनक रास्ता। इस संघर्ष में आप मर भी सकते हैं, किन्तु आप सर ऊँचा रखते हुए सम्मानपूर्वक मरेंगे। आप बेइज्जती के साथ कुत्ते बिल्ली की तरह सड़कों पर सड़ते हुए तो नहीं मरेंगे। याद रखें, हम सब मरणशील हैं। इसलिए अगर मरना ही है तो भीख मांगते हुए मत मरें, खुद को जलील करते हुए मत मरें। जब मरना ही है तो इज्जत के साथ मरें। और इज्जत के साथ जीने और मरने का एक ही निश्चित रास्ता है और वह है समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के लिए जनता के क्रान्तिकारी संघर्षों में सक्रिय रूप से भाग लेना। इस उद्देश्य के लिए आपको हजारों-हजार की संख्या में संगठित होना होगा तथा एकजुट होना पड़ेगा।'' इस संदेश को अपने दिलों में रखते हुए आपको कॉमरेड शिवदास घोष का योग्य छात्र बनने का संघर्ष छेड़ना है। याद रखें, मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तन के झण्डे को बुलन्द करते हुए पूँजीवाद को उखाड़ फेंकने के लिए भारत को हजारों-हजार खुदीराम, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, अश्फाक उल्ला, प्रीतिलता चाहिएं। एआईडीएसओ के तमाम नेता-कार्यकर्ताओं को, विशेषकर मेजबान राज्य मध्य प्रदेश के नेताओं और संगठकों को इस सम्मेलन को आयोजित करने और तमाम मुश्किलों और बाधाओं का मुकाबला करते हुए इसे सफल बनाने के लिए मेरा धन्यवाद।

इन्कलाब जिन्दाबाद!
एआईडीएसओ जिन्दाबाद!
मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तन जिन्दाबाद!
सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम!

नया भूमि अधिग्रहण बिल है किसान-विरोधी – सत्यवान

झज्जर (हरियाणा): शहर की छोटूराम धर्मशाला में 20 दिसम्बर को नये भूमि अधिग्रहण बिल के खिलाफ ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन की ओर से एक सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए एसयूसीआई (सी) केन्द्रीय कमेटी सदस्य एवं राज्य सचिव कॉमरेड सत्यवान ने कहा कि नया भूमि अधिग्रहण बिल किसान-विरोधी है और बिल के तथ्यों पर प्रकाश डालते हुए इसके भ्रमजाल से किसानों को अवगत कराया।

उन्होंने कहा कि 1894 के कानून में केवल सरकारी परियोजनाओं को जनहित बताया गया है। लेकिन नए कानून में प्राइवेट कम्पनियों व पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप स्कीमों के लिए भूमि अधिग्रहण को जनहित करार दिया गया है। उहोंने कहा कि कम्पनियों के मुनाफे को सुनिश्चित करने के लिए ही नया भूमि अधिग्रहण बिल है, न कि जनहित में।

कृषक खेत मजदूर संगठन, हरियाणा प्रदेशाध्यक्ष कॉमरेड अनूप सिंह मातनहेल ने कहा कि 5 साल तक उपयोग न की गई अधिग्रहीत भूमि सरकारी भूमि बैंक में जमा रखने का प्रावधान किसान-विरोधी है और यह भूमि किसानों को वापस मिलनी चाहिए। मास्टर जयकरण ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में मार्किट रेट का चार गुना रेट दिया जाना भी भ्रम है। नये अधिग्रहण बिल के अनुसार जो गांव शहर के 40 किलोमीटर की दूरी पर है केवल वहीं यह प्रावधान लागू है। शहर से 10 किलोमीटर की दूर तक तो मुआवजा दुगुना मिलेगा और वह भी फार्मूले के आधार पर तय किया जाएगा।

संगठन के प्रदेश सचिव कॉमरेड विजय कुमार ने कहा कि अधिग्रहण बिल के अनुसार कम्पनी अधिग्रहीत भूमि को तीसरी पार्टी को बेच सकती है और भारी मुनाफा कमा सकती है, जिसमें से 40 प्रतिशत ही एक बार भू-स्वामी को मिलेगा। संगठन के उपाध्यक्ष कॉमरेड करतार सिंह ने कहा कि नए भूमि अधिग्रहण बिल के मुताबिक खेती को जनहित माना गया है वहीं उद्योग को भी जनहित करार दिया गया है। खेतीयोग्य भूमि के अधिग्रहण की सीमा को राज्य सरकारों पर छोड़ दिया गया है जो किसान हितैषी नहीं है। उन्होंने नया भूमि अधिग्रहण बिल को किसान-विरोधी करार दिया। बैठक को कॉमरेड बलबीर सिंह महेंद्रगढ़, रामकुमार रेवाड़ी, राजबीर, रोहताश भिवानी, नन्दलाल हिसार, सूरत सिंह हिसार, जिले सिंह, धनराज रोहतक, देवीराम जींद, करतार करनाल, जयनारायण, राजकुमार कुरूक्षेत्र आदि ने भी संबोधित किया।

किसान सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड सत्यवान

सरकार की गलत नीतियों की बदौलत बीज, खाद, कीटनाशक दवा, बिजली व डीजल के भाव दिनोंदिन महंगे होते जा रहे हैं जबकि किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है। इससे किसानों के लिए खेती घाटे का सौदा साबित होती जा रही है। किसान की हालत दयनीय है। वह कर्ज में डूबकर आत्महत्या करने को मजबूर है। किसान नेताओं ने बादली के रद्द हो चुके सेज की अधिग्रहीत जमीन किसानों को वापस देने, फसलों के लाभकारी दाम देने, खराब फसलों का मुआवजा तीस हजार रुपए प्रति एकड़ देने और दो माह के अन्दर-अन्दर सिंचाई के लिए 16 घण्टे बिजली देने, 15 दिन के अन्तराल पर नहरी पानी दिए जाने की सरकार से मांग की है।

रांची (झारखण्ड) : गत वर्ष दिल्ली में पैरा मेडिकल छात्रा 'दामिनी' से बलात्कार की जघन्य घटना की बरसी पर शहर के फिरायलाल चौक पर ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन, युवा संगठन ऑल इण्डिया डीवाईओ और छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ के संयुक्त बैनर तले 16 दिसम्बर को एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। शहीद वेदी पर पुष्प अर्पित कर 'दामिनी' को श्रद्धांजलि दी गई। सभा को ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की राज्य सचिव कॉमरेड केया डे ने सम्बोधित किया। उन्होंने स्कूल-कॉलेजों और गली-मौहल्लों में जन कमेटियां बना कर ऐसी घटनाओं का विरोध करने और सामाजिक-सांस्कृतिक आन्दोलन चलाने का आह्वान किया।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly , Date of Printing :5 January, 2014

शहीद खुदीराम बोस जयंती पूरे सम्मान के साथ मनायी गई

आदित्य नगर दुर्ग (छ.ग.) : 3 दिसम्बर को ए.आई.डी.एस.ओ. जिला दुर्ग इकाई द्वारा साइन्स कॉलेज व सुराना कॉलेज दुर्ग में आजादी आंदोलन के महान क्रांतिकारी शहीद खुदीराम बोस जयंती पूरे सम्मान के साथ मनायी गई।

साइन्स कॉलेज दुर्ग में ए.आई.डी.एस.ओ. के द्वारा महान क्रांतिकारी शहीद खुदीराम बोस जयंती के अवसर पर महान क्रांतिकारी शहीद खुदीराम बोस की फोटो पर माल्यार्पण कर सभा की गई। एआईडीएसओ की शहर कमेटी के उपाध्यक्ष देवेन्द्र पाटिल ने कहा कि उन्नत संस्कृति, उन्नत चरित्र निर्माण कर, शोषण मुक्त समाज बनाने का सपना जो इन क्रांतिकारियों ने देखा था उसे पूरा करने के लिए छात्र-छात्राओं को वैज्ञानिक चिंतनधारा के आधार पर सुसंगठित होकर जोरदार छात्र आंदोलन निर्मित करना होगा। उन्होंने छात्रों से अपील करते हुए कहा कि हर युग में छात्र-युवाओं ने संगठित होकर सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिकता व समाज प्रगति के लिए अपने प्राण न्योछावर किये। इसका जीवंत उदाहरण महान क्रांतिकारी खुदीराम बोस हैं। इस अवसर पर नीतू साहू, पूनम नायक, भुनेश्वरी साहू, अनुराग चौधरी, पिंकी निर्मलकर, दीपिका खोब्रागड़े, मिथलेश बंजारे, रीना श्रीवास्तव, राजेन्द्र कुमार सहित लगभग 55-60 छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

सुराना कॉलेज दुर्ग में खुशबू साहू व त्रिवेणी निर्मलकर के नेतृत्व में शहीद खुदीराम बोस जयंती पूरे सम्मान के साथ मनायी गई।

बीए, बीएससी कोर्स बंद करने के फैसले के विरोध में छात्र प्रदर्शन

दुर्ग (छ.ग.) : बीए, बीएससी कोर्स बंद करने के फैसले के खिलाफ 9 दिसम्बर ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक स्टूडेन्ट्स आर्गेनाइजेशन (ए.आई.डी.एस.ओ.) जिला समिति दुर्ग (छ.ग.) के द्वारा विरोध दिवस के रूप में मनाया गया। इस दिन छात्रों द्वारा प्रदर्शन कर माननीय प्रधान मंत्री के नाम जिला कलेक्टरेट, दुर्ग को ज्ञापन सौंपा गया।

ज्ञापन में मांग की गई कि बीए, बीएससी कोर्स बंद करने के फैसले को तत्काल वापस लिया जाय, शिक्षा के सभी क्षेत्रों में बेतहाशा फीस वृद्धि करना बंद किया जाये, सरकार की ओर से शिक्षा के सभी क्षेत्रों में पर्याप्त अनुदान दिया जाये, पाठ्यक्रमों में मनुष्य निर्माण व चरित्र निर्माण, नैतिकता, सांस्कृतिक निर्माण के विषय लागू किये जायें, शिक्षा का निजीकरण-व्यापारीकरण पूर्णत: बंद किया जाये और आजादी आंदोलन के महान क्रांतिकारियों व मनीषियों के जीवन-संघर्ष पाठ्यक्रमों में शामिल किये जायें।

महिलाओं पर बढ़ते अपराधों के खिलाफ रोष प्रदर्शन

दुर्ग (छ.ग.) : नशाखोरी, अश्लीलता, लड़कियों व महिलाओं पर बढ़ते अपराधों पर रोक लगाने एवं छात्राओं को सुरक्षा प्रदान करने की मांग को लेकर ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक यूथ ऑर्गेनाइजेशन (एआईडीवाईओ) और ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेन्ट्स ऑर्गेनाइजेशन (एआईडीएसओ)की जिला दुर्ग इकाइयों द्वारा 16 दिसम्बर को अखिल भारतीय विरोध दिवस के अवसर पर प्रदर्शन किया गया और माननीय प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री छ.ग. शासन के नाम ज्ञापन जिला कलेक्टर को सौंपा गया।

ज्ञापन में जस्टिस वर्मा कमीशन के सुझावों को तुरन्त लागू करने, बलात्कार के मामलों की जल्द सुनवाई के लिए पर्याप्त संख्या में फास्ट ट्रैक कोर्ट्स गठित करने, अपराधियों को उदाहरणमूलक सजा दिये जाने, अश्लील वेबसाइटों, विज्ञापनों, फिल्मों के प्रदर्शन, ड्रग्स और शराब की बिक्री व उत्पादन पर रोक लगाने, महिलाओं के अश्लील चित्रण-विरोधी कानून और यौन उत्पीड़न-विरोधी कानून सख्ती से लागू करने, स्कूल-कॉलेजों के पाठ्यक्रम में महिलाओं को आत्मरक्षा जैसे जूडा-कराटे का प्रशिक्षण दिया जाने, यातायात के साधनों में जी.पी.आर.एस. शुरू करने और सार्वजनिक स्थलों पर पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था करने की मांग की गयी

भोपाल में कन्वेंशन व आरोन (म.प्र.) में जनसभा

भोपाल में कन्वेंशन को सम्बोधित करते हुए कॉ. छाया मुखर्जी

आरोन में जनसभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. सुनील गोपाल

आंगनवाड़ी कर्मियों का जिला सम्मेलन

आंगनवाड़ी कर्मियों को सम्बोधित करती हुए पुष्पा दलाल

मुरादाबाद(उ.प्र.): ऑल इण्डिया यूटीयूसी से सम्बद्ध आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री एवं सहायिका वेलफेयर एसोसियेशन, उ.प्र. के जनपद मुरादाबाद का तीसरा जिला सम्मेलन स्थानीय अम्बेडकर पार्क में 25 दिसम्बर को सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में जिले की आंगनवाड़ी कर्मियों की सैकड़ों प्रतिनिधियों ने शिरकत की। सम्मेलन की शुरूआत में एसोसियेशन की जिला सचिव सुनीता आहलुवालिया द्वारा रिपोर्ट पेश की गई। सम्मेलन में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका यूनियन, हरियाण राज्य की महासचिव और आगंनवाड़ी एम्लाइज फैडरेशन ऑफ इण्डिया की महासचिव पुष्पा दलाल मुख्य वक्ता थी।

पुष्पा दलाल ने कहा कि आईसीडीएस योजना को 38 वर्ष पूरे हो चुके हैं लेकिन इस योजना के प्रति लापरवाही बरतने का सरकारों का रवैया नहीं बदला है। देश की आबादी महंगाई, बेरोजगारी, भूखमरी की मारी हुई है। सरकार महिलाओं को सस्ती मजदूरी अर्थात् मामूली से मासिक मानदेय भत्ते पर काम पर रख कर आंगनवाड़ी कर्मियों का शोषण कर रही है। उन्हें सरकारी कर्मचारी के बजाय 'स्वैच्छिक कार्यकर्ता' का दर्जा दिया हुआ है। न तो किसी भी मानक के हिसाब से योजना के लाभार्थियों और गर्भवती धात्री महिलाओं को पूरक पोषाहार मिल पाता है और न ही उसकी जमीनी कार्यकर्ता आंगनवाड़ी कर्मियों को उचित मेहनताना। देश भर में कार्यरत 25 लाख से ज्यादा आंगनवाड़ी कर्मियों को कोई वेतनमान देना तो दूर रहा न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि उ.प्र. में स्थिति सबसे खराब है। यहां देश के किसी भी अन्य राज्य से ज्यादा लगभग साढ़े 3 लाख आंगनवाड़ी कर्मी कार्यरत हैं लेकिन उन्हें सबसे कम मानदेय राशि दी जा रही है जो शर्मनाक है। यह राशि घर का गुजारा चलाने के लिए नाकाफी है। गर्म पके पकाये खाने की सप्लाई का ठेका एनजीओ को दिये जाने पर ऐतराज जताते हुए उन्होंने इसे निजीकरण की शुरूआत बताया। इसके खिलाफ प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित करते हुए मुख्यमंत्री, उ.प्र. को भेजा गया। उन्होंने उ.प्र. आंगनवाड़ी कर्मियों को अपना संगठन मजबूत करने और सरकार की कर्मचारी-विरोधी नीतियों के खिलाफ जोरदार आन्दोलन गठित करने का आह्वान किया। हरियाणा का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि जेपीए के नेतृत्व में आंगनवाड़ी कर्मियों ने अपनी एकता और संघर्ष के बल पर आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री के लिए 7500 रुपये और सहायिका के लिए 3500 रुपये मासिक मानदेय और आंगनवाड़ी सेण्टरों पर अच्छे पोषाहार की व्यवस्था करा पाने में कुछ कामयाबी हासिल की है। सम्मेलन में मांग की गई कि 15 दिन का शीतकालीन अवकाश दिया जाए।

आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री एवं सहायिका वेलफेयर एसोसियेशन की मुरादाबाद जिला कमेटी चुनी गई जिसकी रजनी दिवाकर को अध्यक्ष, भूरी देवी, हेमलता ठाकुर, अनीता शर्मा को उपाध्यक्ष, सुनीता आहलुवालिया को सचिव चुना गया। सम्मेलन को ऑल इण्डिया यूटीयूसी के उ.प्र. राज्य सचिव विजयपाल सिह, क्षेत्रीय सचिव कॉ. मुनीश चन्द्र त्यागी, आंगनवाड़ी एम्प्लाइज फैडरेशन ऑफ इण्डिया (एईएफआई) की अध्यक्षा कमलेश चहल, एसोसियेशन की राज्य सचिव शशिबाला ने भी सम्बोधित किया।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. सत्यवान द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष : 011-25726631, Email : sarvaharadrishtikon@gmail.com